सायकिल चलाइये , सायकिल चलाने दें

23 फरवरी रविवार सुबह सात बजे से शाम पाँच बजे तक
कलकत्ता भर के चक्राकार सायकिल रैली में शामिल हों

आप शायद जानते ही होंगे कि कलकत्ता शहर के अंदर सायकिल चलाना बहुत ही कठिन हो चला है। एक तरफ सायकिल चालकों पर पुलिसिया जुल्म, जुर्माना फजिहत जो वर्ष 2008 के अगस्त महीने से ही जारी है। पिछले जून महीने से ही कलकत्ते के करीब सभी सड़कों पर कलकत्ता पुलिस ने "नो साईक्लीनिग" का बोर्ड लगा रखा है। वर्ष 2013 के 28 मई को एक नोटिस जारी कर कलकत्ते के करीब सभी सड़कों पर सायकिल चलाने पर पाबन्दी लगा दी गई थी। हमारे राज्य ट्राफिक नियंत्रण कानून के तहत पुलिस का यह नोटिस दो महीने से अधिक बरकरार नही रह सकता है, यदि सरकार ऐसी नोटिस पर अपनी मोहर न लगा दे। सायकिल चालकों और सायकिल प्रेमियों ने कई बार पुलिस मुख्यालय लालबजार से लेकर परिवहन मंत्री, श्रम मंत्री तक के समक्ष जाकर सूचित किया है कि इस सरकारी आदेश पर सरकार की मोहर नही लगी है। यानी कलकत्ते के किसी भी सड़क पर सायकिल चलाने की पाबन्दी नही है। लेकिन कौन सुनता है? कलकत्ते की पुलिस के विभिन्न विभाग के लोग अब सायकिल चालकों को रास्ते में रोक कर फर्जी कागज देकर, बिना रसीद के 100 रु, से 200 रु, तक वसूल रहे है। ट्राफिक विभाग के विशेष पुलिस आयुक्त श्री मित्रा बाबु या अदक साहब से कई बार मिलकर कहने के बावजूद किसी भी सड़क पर से हर तरह के "नो सायक्लिनिग" के बोर्ड नही हटाये गये।

दूसरी ओर सड़कों पर निजी गाड़ियों की संख्या और उनका दबदबा भयानक रुप से बढ़ गया है।कुछ दिनो पहले तक जहाँ सायकिल गैरेज थे उन्हे निजी गाड़ियाँ या मोटर सायकिल रखने के लिये हथिया लिये गये है। मुख्य सड़कों की बात तो छोड़ ही दी जाय, सकरी सड़कों पर भी निजी गाड़ियों को दिन भर खड़ा रखा जाता है। कुल मिलाकर सायकिल चालकों को सड़कों पर से और भी दरकीनार किया जा रहा है। तेज रफ्तार से चलने वाली गाड़ियाँ और बसें सायकिल चालकों को धक्के मार कर चली जा रही हैं। सायकिल चालकों की मौतें हो रही हैं या अंगहीन हो रहे हैं। हाल के कलकत्ता पुलिस की एक रिर्पोट के अनुसार वर्ष 2008 मे ऐसी धक्कामारी की संख्या 47 थी, 2009 मे 53, 2010 मे107, 2011 मे 132 और 2012 मे 179 हुई। यानी सायकिल पर पाबन्दी के चार सालों मे धक्कामारी चार गुना बढ़ गई। जाहिर है सायकिल पर पाबन्दी के चार सालों में सायकिल चालकों की सुरक्षा चार गुना घटी है। मोटर गाड़ियों द्वारा सायकिल सवारों को धक्के मार कर चले जाने का रवैया चार गुना बढ़ा है। जब कि सायकिल चालकों की सुरक्षा के बहाने ही पाबन्दी लगाई गई थी। अब कलकत्ता पुलिस अपने ही तैयार किये तथ्यों का क्या स्पष्टिकरण देगी?

गौर तलब है कि मोटरगाड़ियों की वजह से ही इस शहर के लोगों के फेफड़े बेहाल हैं। विश्व स्वास्थ संगठन से लेकर शहर के चिकित्सकों तक ने घोषणाँ की है कि दूषित वायु के कारण फेफड़ो के कैन्सर भयानक रुप से बढ़ रहे है। सबसे अधिक नुकसान बच्चो का हो रहा है। गरीब व अमीर सभी के बच्चे

बीमार फेफड़े लेकर बड़े हो रहे हैं। अतः मोटर गाड़ियाँ आज कालकत्ते की समस्या है और सायकिल इसका जीवन्त समाधान है। रिक्शा और ठेले भी समाधान हैं। ऐसे समाधान के रास्ते पर पिछले दस–बारह सालों से नेदरलैन्ड, जर्मनी, फ्रान्स, जैसे यूरोपीय देश चलना शुरु किये हैं। चीन बराबर ही सायकिलपंथी रहा है। लातिन अमरिकी या पूर्वी एशियाइ कुछ देश भी इसी रास्ते पर चल रहे हैं। पाँच साल पहले हमारे 'राष्ट्रीय परिवहन नीति' मे कमसे– कम कागज–कलम पर तो सायकिल, रिक्शा, ठेले, को प्रोत्साहित करने की बात लिखी गयी थी।

लेकिन हमारा शहर एक प्रत्यक्ष अपवाद है। देढ़ दशक पहले की कलकत्ता नगरपालिका की रिर्पोट से पता चलता है कि, उन दिनो कलकत्तावासियों के पैंतिस प्रतिशत के घर पर सायकिल थे। आज कितने हैं? कौन जानता है! लेकिन घर–घर से सायकिल हटा कर पिछले पन्द्रह सालों से मोटरगाड़ियाँ, मोटरसायकिल खरीदने की होड़ मची है। इसीलिए जिनकी सायकिल निर्भर जीविका, वो अखबार बेचने वाले, कुरियर वाले, दूध वाले, पूजा करने वाले, मिस्त्री, दुकनदार, सिक्यूरटी, मेडिकल रिप्रजनटिव, बेकरी सप्लायर, मछली वाले, प्राइवेट ट्यूटर, फिजियोथिरेपिस्ट, डाब वाले ,छात्र–छत्रायें और सायकिल पर दफ्तर जाने आने वालों आदि की संख्या लाखो की तादाद मे होने के बावजूद, उनकी सुधि कौन रखता है? मोटरगाड़ियों के जरिये दिखलाये गये जहरीले विकास के माध्यम से हम अपने बच्चों का भविश्य जिस तरह बना रहे हैं, उसकी जिम्मेवा्री क्या हमारे उपर नही ही आती है?

अतः उठ खड़े होने का समय आ गया है। आवाज बुलन्द करने का समय आ गया है— कलकत्ता शहर फिर सायकिलमुखी हो। नेदरलैन्ड के राष्ट्रप्रधान सायकिल पर पार्लामेन्ट आते हैं। अतीत मे हमारे देश मे भी ऐसे मिसाल हैं। आइये हम भी अपने कार्यस्थल पर सायकिल पर जाये। और सरकारी पहल पर मजबूती से निजी मोटरगाड़ियों को नियंत्रित और निरुत्साहित किया जाय। ट्रेन, मेट्रो, बस परिवहन व्यवस्था शक्तिशाली किया जाय। शहर मे बच्चे—बुढ़े सभी बेखौफ घुमे–फिरे। सायकिल, रिक्शे,ठेलों को सुरक्षित जाने–आने के लिए जरुरत पड़े तो चौड़ी सड़कों को से लेन काट कर सयकिल के लिए अलग रास्ता बनाया जाय।

किसी भी सूरत मे किसी भी सड़क पर दिन रात किसी भी समय सायकिल पर पाबन्दी न लगाई जाय्।

कलकाता सायकिल समाज , युव भारत , पिडिएसएफ़, एनएपीएम , बिग्गान ओ बिग्गाण कर्मी , बिग्गान बार्ता , मन्थन , दुर्बार कलम , घूम नेई , चक्र सत्याग्रह , कलकाता सायकिल आरोही अधिकार ओ जीबीका रक्खा कमिटि , असांगठित श्रमिक संग्रामी मंच, होसियारी वर्कर्स यूनिटी सेंटर , हकार संग्राम कमिटि , पारेजिया , आमरा , दमामा , कालि कलम इजल , देशलाइ काठी , दृश्यांतर , दिशा, सबुज मंच , स्वयं निजुक्ति

9477355084/ 033–24147730/ 9830881213/ 8013473747/ 033–24913666/ 9831695661/ 7278344538/ 9903061796/ 9674983989

रघु जना, कलकाता – 54 द्वरा प्रकाशित किया गया है